बी.एच.आई.सी. 134

भारत का इतिहास: 1707-1950

परीक्षा के लिए महत्वपूर्ण प्रश्न

आसान भाषा में सभी प्रश्नों के उत्तर

Scholarly Minds

1857 की क्रांति के क्या कारण थे? चर्चा कीजिए ।

1857 की क्रांति, जिसे प्रथम स्वतंत्रता संग्राम या सिपाही विद्रोह भी कहा जाता है, भारतीय उपमहाद्वीप में ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ एक बड़ा विद्रोह था। इसके कई कारण थे:

- **सामाजिक और धार्मिक कारण:**
  ब्रिटिश शासन ने भारतीय समाज की धार्मिक और सांस्कृतिक परंपराओं को चुनौती दी थी। भारतीयों के धर्म और संस्कृति के प्रति ब्रिटिश अधिकारियों की उपेक्षा ने सामाजिक असंतोष को जन्म दिया।
    - **ईस्ट इंडिया कंपनी का 'नए कारतूसों' का प्रयोग:** यह एक प्रमुख कारण था। यह अफवाह थी कि कारतूसों में गाय और सूअर की चर्बी का उपयोग किया गया है, जो हिन्दू और मुस्लिम सैनिकों के लिए अपमानजनक था। हिन्दू गाय को पवित्र मानते हैं और मुसलमान सूअर को नापसंद करते हैं।
    - **धार्मिक सुधार और विधवाओं की स्थिति:** ब्रिटिश सरकार ने विधवा विवाह और सती प्रथा पर प्रतिबंध लगाया था, जिससे धर्मनिष्ठ हिंदुओं में असंतोष पैदा हुआ।
- **आर्थिक कारण:**
  ब्रिटिश सरकार ने भारतीय व्यापार और उद्योगों पर नियंत्रण बढ़ाया, जिससे भारतीय कारीगरों और किसानों को भारी नुकसान हुआ।
    - **स्थायी बंदोबस्त (Permanent Settlement):** यह योजना बंगाल में लागू की गई थी, जिससे जमींदारों पर अधिक दबाव पड़ा और किसानों की स्थिति और खराब हुई।
    - **अत्यधिक कर:** भारतीय किसानों पर अत्यधिक करों की मार पड़ी और वे भुखमरी का शिकार हुए।
- **सैन्य कारण:**
  भारतीय सैनिकों (सिपाहियों) के प्रति ब्रिटिश अधिकारियों का व्यवहार कठोर था। सिपाही को कम वेतन, खराब भोजन, और खराब सेवा शर्तों का सामना करना पड़ता था।
    - ब्रिटिश सैनिकों द्वारा भारतीय सिपाहियों को नीचा दिखाने का तरीका भी विद्रोह का कारण बना।
- **राजनीतिक कारण:**
  ब्रिटिश शासन ने भारतीय राजाओं और सामंतों की शक्ति को कम किया। उनकी स्वतंत्रता को

खत्म करने और अंग्रेजों के नियंत्रण को बढ़ाने के कारण अनेक स्थानीय शासकों में असंतोष था।

1857 की क्रांति के परिणाम:

- ब्रिटिश साम्राज्य ने इस विद्रोह को दबा दिया, लेकिन इसे भारतीय उपमहाद्वीप में ब्रिटिश शासन के खिलाफ असंतोष और संघर्ष की शुरुआत के रूप में देखा गया।
- ब्रिटिश ने भारत में सीधी शाही शासन व्यवस्था (Crown Rule) लागू की। ईस्ट इंडिया कंपनी का शासन समाप्त कर दिया गया और भारत पर ब्रिटिश सम्राट का प्रत्यक्ष नियंत्रण स्थापित हुआ।

बंगाल में स्थाई बंदोबस्त पर चर्चा कीजिए। उसके क्या परिणाम हुए।

स्थायी बंदोबस्त (Permanent Settlement) 1793 में लॉर्ड कार्नेवालीस द्वारा बंगाल में लागू किया गया था। इसका उद्देश्य भूमि राजस्व प्रणाली को स्थिर करना था। इस व्यवस्था के तहत जमींदारों (landlords) को भूमि का मालिकाना अधिकार दिया गया और उन्हें राज्य के लिए निर्धारित एक निश्चित कर (revenue) चुकाने की जिम्मेदारी दी गई।

स्थायी बंदोबस्त के उद्देश्य:

- ब्रिटिश सरकार को स्थिर और सुनिश्चित राजस्व प्राप्त करना।
- ज़मींदारों को कृषि उत्पादों से अधिक आय प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित करना।

स्थायी बंदोबस्त के परिणाम:

- **जमींदारों को लाभ:** जमींदारों को भूमि पर स्थायी अधिकार मिल गए, लेकिन उन्हें उच्च करों का भुगतान करना पड़ा। वे किसानों से उच्च दरों पर कर वसूलने लगे।
- **किसानों की स्थिति में गिरावट:** किसानों को अपनी भूमि का मालिकाना अधिकार नहीं था, और उन्हें जमींदारों के अत्यधिक शोषण का सामना करना पड़ा। इससे किसानों की हालत खराब हुई, और वे कर्ज के जाल में फंस गए।
- **कृषि का उपेक्षित होना:** चूंकि जमींदारों का मुख्य उद्देश्य राजस्व वसूलना था, कृषि उत्पादन में सुधार की कोई पहल नहीं की गई। इसके परिणामस्वरूप कृषि उत्पादन में गिरावट आई।
- **सामाजिक और आर्थिक असमानता:** यह व्यवस्था भारत में एक नए वर्ग की जमींदारी व्यवस्था का निर्माण कर गई, जिसमें जमींदारों के अलावा गरीब किसानों और श्रमिकों की स्थिति बिगड़ गई।

ब्रिटिश के अधीन कृषि के वाणिज्यकरण के प्रभाव का वर्णन कीजिए।

ब्रिटिश शासन के तहत भारत में कृषि को वाणिज्यिक (commercial) उद्देश्य से विकसित किया गया, यानी कृषि उत्पादन को केवल ब्रिटिश उद्योगों के लिए कच्चे माल की आपूर्ति के रूप में देखा गया। इस प्रक्रिया के परिणामस्वरूप निम्नलिखित प्रभाव हुए:

Scholarly Minds

- **कृषि के वाणिज्यिकरण के कारण:**
  - ब्रिटिश सरकार ने भारत में निर्यात के लिए विशेष कृषि उत्पादों का उत्पादन बढ़ाने की नीति अपनाई, जैसे कि कपास, चाय, रबड़, और अफीम।
  - किसानों को केवल एक या दो उत्पादों की खेती करने के लिए प्रेरित किया गया, जिससे उनकी आजीविका का विविधता में नुकसान हुआ।
- **कृषि संकट और भूखमरी:**
  - चूंकि किसानों को अधिक लाभ वाले उत्पादों को उगाने के लिए दबाव डाला गया, सामान्य अनाज जैसे गेहूं और चावल की खेती घट गई। इसके परिणामस्वरूप कृषि संकट और भुखमरी की घटनाएं बढ़ गईं। 1770 का बंगाल अकाल इस नीति का एक प्रमुख उदाहरण है, जिसमें लाखों लोग मारे गए थे।
- **किसानों का शोषण:**
  किसानों को भूमि पर मालिकाना अधिकार नहीं था, और वे जमींदारों या साहूकारों से कर्ज लेकर खेती करते थे। कृषि के वाणिज्यिकरण ने किसानों पर और भी अधिक दबाव डाला, क्योंकि उन्हें उच्च करों और ब्याज दरों का सामना करना पड़ा।

राजा राममोहन राय के मुख्य विचारों पर चर्चा कीजिए।

राजा राममोहन राय (1772-1833) भारतीय पुनर्जागरण के प्रमुख नेता और समाज सुधारक थे। उनके विचारों में विशेष रूप से सामाजिक सुधार और धर्मनिरपेक्षता पर जोर था। उनके कुछ मुख्य विचार थे:

- **सती प्रथा का विरोध:**
  राजा राममोहन राय ने सती प्रथा (पतिव्रता द्वारा पति की मृत्यु के बाद उसके शव के साथ जलकर मरने की प्रथा) का कड़ा विरोध किया। उन्होंने इसके खिलाफ कानून बनाने की मांग की, जो 1829 में ब्रिटिश सरकार द्वारा लागू किया गया।
- **हिंदू धर्म में सुधार:**
  राजा राममोहन राय ने हिंदू धर्म में सुधार की आवश्यकता को महसूस किया। वे धार्मिक आस्थाओं को तर्क और विज्ञान के आधार पर समझना चाहते थे। उन्होंने मूर्तिपूजा और अंधविश्वास का विरोध किया।
- **ब्राह्मो समाज की स्थापना:**
  1828 में राजा राममोहन राय ने **ब्राह्मो समाज** की स्थापना की, जिसका उद्देश्य भारतीय समाज में धार्मिक और सामाजिक सुधार लाना था। इस समाज ने विभिन्न धार्मिक मान्यताओं का विरोध किया और तर्क, मानवता और समाजिक न्याय की शिक्षा दी।
- **महिलाओं के अधिकार:**
  राजा राममोहन राय महिलाओं के अधिकारों के समर्थक थे। वे महिलाओं को शिक्षा और समान अधिकार देने के पक्षधर थे।
- **समानता और धार्मिक सहिष्णुता:**
  उनका विश्वास था कि सभी धर्मों के बीच सहिष्णुता होनी चाहिए। वे किसी भी धर्म के कट्टरता और संकीर्णता का विरोध करते थे।
- **विज्ञान और तर्क का समर्थन:**
  वे तर्क, विज्ञान और आधुनिकता के पक्षधर थे। उन्होंने भारतीय समाज को अंधविश्वास और रूढ़िवादिता से बाहर निकालने का प्रयास किया।

Scholarly Minds

राजा राममोहन राय भारतीय समाज के एक महान सुधारक थे, जिन्होंने भारतीय समाज में धर्म, शिक्षा और सामाजिक बदलाव के लिए एक नई दिशा दिखाई।

Scholarly Minds